National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(61): 72-75
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

सपना कुमारी राय
शोध-छात्रा, हिन्दी विभाग,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा,
बिहार

Correspondence:
सपना कुमारी राय
शोध-छात्रा, हिन्दी विभाग,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा,
बिहार

"अष्टछाप संप्रदाय और कवि परमानन्द दास का काव्य"

सपना कुमारी राय

मूल शब्द- कृष्ण भक्ति, अष्टछाप कवि, पुष्टिमार्ग, वल्लभाचार्य, परमानंद, भक्ति पूर्ण कविता अष्टछाप और परमानंद दास : परिचय अष्टछाप का अर्थ

सारांश

अष्टछाप का शाब्दिक अर्थ है 'आठ कवियों का समूह'। यह शब्द कृष्ण भक्ति परंपरा में विशेष महत्व रखता है। अष्टछाप उन आठ प्रमुख कवियों का समूह है जिन्होंने श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं, रासलीला और वृंदावन की सुंदरता का अत्यंत मधुर काव्य के माध्यम से चित्रण किया। इन कवियों ने मुख्यतः वल्लभाचार्य और उनके पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के सान्निध्य में रहकर काव्य साधना की। इनकी रचनाओं में भक्ति, प्रेम और कृष्ण की लीलाओं का सुंदर वर्णन मिलता है।

अष्टछाप के आठ कवि

1. सूरदास जी
2. परमानंद दास जी
3. कृष्णदास जी
4. कंकरदास जी
5. चितस्वामी जी
6. गोविंदस्वामी जी
7. नंददास जी
8. छीतस्वामी जी

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग है। इसमें भी अष्टछाप का वैशिष्ट्य अप्रतिम है। अष्टछाप के कवियों ने हिन्दी काव्य को गरिमा मण्डित ही नहीं किया वरन् भारतीय संस्कृति का संरक्षण भी किया है। इन कृष्णभक्त कवियों में सूरदास और नंददास के बाद परमानंददास का भक्ति साहित्य को उच्चतम शिखर पर पहुंचाने में विशिष्ट योगदान रहा है। ये श्रीकृष्ण लीलागान में सिद्धहस्त ही नहीं थे वरन् रससिद्ध संगीतकला मर्मज्ञ भी थे। इनकी पदावली में अनुभूति की गहनता ही नहीं शिल्पगत सौन्दर्य का व्यापक प्रसार भी दिखाई देता है।

इस शोध प्रस्ताव में कृष्णभक्ति काव्यधारा के उद्भव और विकास के विवेचन से हमारा अभिप्राय संस्कृत के वेदव्यास प्रणीत श्रीमद्भागवत, जयदेव कृत गीत गोविन्द और विद्यापति की पदावली में निहित लोक संस्कृति और श्रीकृष्णपरक लोकोपकारी भक्ति भावना को उद्घाटित करना है। इन रचनाओं में लोक भावना, लोक हृदय का वह सरल, कोमल और निश्छल भावोच्छवास है जो जड़ चेतन सभी को अपनी तरलता से सिक्त कर देता है तथा आनंदालोक में विचरण कराता है।

परमानंददास का जीवन अष्टछापीय कवि सूरदास आदि की भाँति ही पुष्टिमार्गीय चेतना से परिपूर्ण था। यह जीवनपर्यन्त पुष्टिमार्गीय सिद्धान्तों के अनुयायी और प्रचारक रहे। इन्होंने महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के दर्शाये मार्ग के अनुरूप श्रीकृष्णभक्ति की स्रोतस्विनी प्रवाहित कर भक्तजनों को आह्लादित किया।

अष्टछापीय कवियों की भाँति परमानंददास भी अकबर बादशाह के शासनकाल में हुए थे जिन्हें तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश ने प्रभावित किया, जिससे इन्होंने समाज के कल्याण के लिए श्रीकृष्ण भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। आप गोस्वामी वल्लभाचार्य जी एवं उनके पुत्र गुसाई विट्ठलनाथ जी के कृपापात्र रहे। जाति की उच्चता और निम्नता आपकी भक्ति में कही बाधक नहीं रहीं। इनको गोवर्धन में स्थित श्रीनाथ जी के मन्दिर में शरण मिली जहाँ रहकर आप अपने आराध्य श्रीनाथ जी (श्री कृष्ण) के दर्शन करते थे तथा अष्टप्रहर की सेवा में यथासमय लीला गान कर अपने आराध्य को रिझाने का प्रयास करते थे।

परमानंददास ने 2000 पदों का सृजन किया। इनके पदों को तीन भागों नित्य लीला. वर्षोत्सव एवं प्रकीर्ण पद में विभाजित कर संगृहीत किया गया है। नित्य लीला के अन्तर्गत मंगलाचरण, स्वरूप वर्णन, दान आवनी, आसक्ति, बेनुगान, मान, रास, युगल रस, सुरतांत, खण्डिता तथा वर्षोत्सव के अन्तर्गत जन्माष्टमी बाल-लीला, राधाष्टमी, दशहरा, दीपावली, गोवर्धन पूजा, होली फूल मण्डली, गणगौर आदि के पद एवं प्रकीर्ण के अन्तर्गत आश्रय, विनय महात्म्य यमुना जी, गंगा जी, महाप्रभु जी और गुंसाई जी से संबंधित पद आते हैं। इनमें परमानंददास की विलक्षण प्रतिभा का परिचय मिलता है।

परमानंददास के काव्य में रस, भक्ति भावना, ब्रज भाषा का मार्दव और शैली तथा छन्द और संगीत का वैशिष्ट्य विद्यमान है जो उनके काव्य की उत्कृष्टता और उपादेयता को प्रदर्शित करता है। इन्होंने श्रीकृष्ण के जन्म के समय गाये जाने वाले बधाई गीत का वर्णन कर लोक परम्पराओं का बोध कराया है जो प्राचीन समय से प्रचलित है-

आजु बधाऔ कौ दिन नीको।
नंद घरूनि जसोमति जायौ है लाल भांवतौ जी को।

इसी प्रकार इन्होंने अपने आराध्य श्रीकृष्ण व राधा के अनुपम सौन्दर्य का अनूठा चित्रण किया है,

देखत ब्रजनाथ बदन मदन कोटि बारौ।
जलज निकट नयन नीर उमा विचारौ।

या

अमृत निचोड़ कियो इक ठोर।
तेरो बदन संवारि सुधानिधि ता धिन विधि रची ना और।

तो कहीं पर इन्हें गिरधारी के दर्शन में ही नेत्रों का सुख प्राप्त होता है-

कमल मुख देखत त्रिपति ना होई
इहिं सुख कहा सुहागिन जाने, रही निशाभरी सोई ।

परमानंददास को श्रीकृष्ण का बांसुरी वादन, राधा की मान प्रवृति और रासलीला के प्रसंग मनमोहक लगते हैं। रास वर्णन तो इन्हें अत्यन्त प्रिय है। "चौरासी वैष्णवन की वार्ता के अनुसार इन्हें को रासलीला का विशेष साक्षात्कार हुआ था। इसलिए इन्होंने प्रभुरास, स्वामिनी रास और मण्डल रास- इन तीनों रूपों में रास का वर्णन किया किन्तु रात में राधाकृष्ण की नृत्य दक्षता प्रदर्शित की है-

रास रच्यो बन कुँवर-किसौरी।
मंडप-विपुल सुभग वृंदावन जमुना- पुलिन स्यामघन-गोरी।

इनके अतिरिक्त आप कहीं श्रीकृष्ण की बाल लीला, दशहरा, गोवर्धन पूजा, होरी, फाग, हिंडीरा आदि के पद लोक संस्कृति और परम्पराओं का जीवंत चित्र प्रस्तुत करते है। पालने में झूलते बालक कृष्ण की चेष्टाएँ अनूठी और मनमोहक है-

गोदी बैठी झूलावती जसुमति अति फूली देखत ब्रजबाल।

इसी प्रकार होली फाग के पद भी अनुपम है-

आजु माई! मोहन खेलत होरी।
नौतन भेष काछि ठाढे भये संग राधिका गौरी।

यही नहीं, आश्रय, विनय, यमुना, गंगा महाप्रभु जी, गुसाई जी की स्तुति से संबंधित पद लोकभावना और भक्त हृदय के उद्गारों को उद्घाटित करते हैं। प्रभुशरण आराध्य की दयालु प्रवृत्ति और दृष्टि को इन्होंने इस प्रकार व्यंजित किया

जब गोविन्द कृपा करे तब सब बनि आवे।
सुख सम्पति आनंद घनौ घर बैठे पावे।

पुष्टि मार्ग में यमुना जी और गुरु की महत्ता सर्वोपरि है। अतः परमानंददास ने इनका भी गुणगान किया है।

श्री जमुना जी! दीन जानि मोहिं दीजै ।
नंद कौ लाल सदा वर माँगौ सब गोपिन की दासी कीजै।

या

श्री वल्लभ रतन-जतन करि पायौ
बह्यो जात मोहि राखि लिया है ये सुनि हाथ गहायौ।

इस प्रकार हम देख पाते हैं कि परमानंद दास उच्च कोटि के कवि है। वे सागर की पदवी से विभूषित तथा सारंग की छाप के कवि हैं। इनके पदों में पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणाली का प्राधान्य है जिसके मूल बीज श्रीमद्भागवत में विद्यमान है। यही नहीं, इनके पदों में नामकरण, सगाई, तेल- हल्दी जैसे संस्कारों के वर्णन ब्रज संस्कृति और गोप जीवन की आंचलिक छटा प्रस्तुत करते हैं। होली धमार, गोचारण, देवोत्थान जैसे उत्सव भी ब्रज संस्कृति के द्योतक हैं। वात्सल्य और श्रृंगाररस के मर्मज्ञ है। परमानंद दास के जन्मोत्सव, बाल चापल्य, सगाई आदि प्रसंगों के पदों में रसोल्लास और आनन्दोल्लास काव्य का प्राणतत्व बन गया है। श्रीकृष्ण द्वारा दुलहिन की कामना में उल्लास की सहजता दृष्टव्य है-

मैया मोहि ऐसी दुलहिन भावै।
जैसे यह काहू की टटोनिया, रुनक झुनक घर आवै।

मधुर रस के विविध पक्षों को भी परमानंद दास ने अपनाया है। इन्होंने श्रीराधा प्रेम (मधुस्नेह) के उल्लास के लिये श्री चन्द्रावली जी के प्रेम (घृतस्नेह) का पर्याप्त वर्णन किया है -

इह हरि के उर को गज मोती।

चन्द्रावली! कहाँ तै पायो दूरि करत दिन मनि की जोती।

परमानंद दास के पदों में भावशबलता, भक्ति-माधुर्य और रूप-शोभा के चित्रण की कुशलता दर्शनीय है। कहीं भाव वैचित्र्य है, कहीं भगवन्ता और ऐश्वर्य का प्रकाशन है और कहीं गोदोहन आदि के दृश्य अनूठे हैं।

कलात्मकता की दृष्टि से भी परमानंद दास की रचनाएँ उत्कृष्ट है। इनमें ब्रज भाषा का माधुर्य ही नहीं वरन् भाषा भाव की अनुगामिनी एवं सम्प्रेषणीय है। कहीं भाषा चित्रात्मक और चमत्कारपूर्ण है तो कहीं ध्वन्यात्मक संगीत की सृष्टि करती है। कहीं पदों में इनकी प्रबन्ध सामर्थ्य के दर्शन होते हैं तथा कहीं जीवन और उपासना के सिद्धान्तों से आप्लावित अर्थ गाम्भीर्यपूर्ण सूक्तियाँ अनूठी हैं। कहीं भाषा के कुछ प्रयोग बड़े अप्रचलित और शोध सापेक्ष हैं जैसे, **कहिबी की बी**। कहीं लोचदार शब्दों मुरलिया, पंजनियाँ, नोई, दुलहिनि, लरिकनि, लपटाति आदि के प्रयोग सरसता और माधुर्य भाव के उत्कर्षक हैं। छन्द और संगीत का भी अदभुत तालमेल है। यहीं कारण है कि इनके पद विभिन्न राग-रागिनियों में सुगेय है जिनसे इनका तलदर्शी संगीत का ज्ञान प्रकाश में आता है। वस्तुतः इनमें गायन, वादन और नृत्य का अनूठा संगम है। पदों में सर्वत्र गेयता विद्यमान है। संगीत की ध्रुपद, धमार भजन और कीर्तन शैली भक्तिभाव की उत्कर्षक है। यही नहीं मध्यकालीन जातीय वैषम्य, ऊँच-नीच के भेदभाव में अरुचि तथा भक्ति के क्षेत्र में साम्यभाव की प्रेरणा विद्यमान है। पदों में भारतीय संस्कृति और लोकभावना का जीवन्त रूप देखने को मिलता है। वस्तुतः वर्तमान संदर्भ में भी इनके पदों की सार्थकता और उपादेयता सिद्ध होती है।

इन्हीं विशेषताओं के कारण परमानंद दास के काव्य के अध्ययन का विचार प्रस्तावित किया गया है। मेरी जानकारी के अनुसार शोध गंगा एवं कई अन्य खोज माध्यमों में इस विषय पर हुए शोध कार्य का कोई विवरण उपलब्ध नहीं है इसलिए इस विषय को मैंने शोध कार्य के लिए चुना है।

(1) सूचनाओं के स्रोत -

(क) प्राथमिक स्रोत (आधार ग्रन्थ)

1. अष्टछापीय सागर भाग-1, 2 व 3, सम्पा. डॉ. अच्युत लाल भट्ट, धानुका प्रकाशन, रमणरेती-वृन्दावन
2. सूरसागर, सूरदास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
3. परमानंद दास, सम्पा, ब्रजभूषण शर्मा, विद्या विभाग, कांकरोली, राज
4. अष्टछाप परिचय, प्रभुदयाल मीतल, अग्रवाल प्रेस, मथुरा
5. अष्टछाप, विद्या विभाग, कांकरोली, राज.
6. अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय, डॉ. दीनदयाल गुप्त, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
7. कीर्तन संग्रह भाग-1,2,3; प्रकाशक लल्लू भाई, छगन लाल देसाई, रीची रोड अहमदाबाद
8. दो सौ बावन वैष्णावन की वार्ता, हरिराय, शुद्धाद्वैत एकेडेमी, कांकरोली, राज
9. चौरासी वैष्णावन की वार्ता, हरिराय, शुद्धाद्वैत एकेडेमी, कांकरोली, राज

(ख) द्वितीयक स्रोत (सहायक ग्रन्थ)

1. भक्त नामावली, ध्रुवदास, इंडियन प्रेस, प्रयाग, वर्ष 1928
2. भक्तमाल, प्रियादास, श्री लक्ष्मी वैंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई
3. भक्ति सूत्र, नारद, गीता प्रेस, गोरखपुर
4. भक्तिकालीन काव्य में राग और रस, डॉ. दिनेश चन्द्र गुप्त, भारती प्रकाशन, लखनऊ
5. श्रीमद भागवत पुराण, वेदव्यास, गीताप्रेस गोरखपुर
6. गीत गोविन्द, जयदेव, अनु. रामचंद्र वर्मा शास्त्री, अंकुर पब्लिकेशन, 30/20, शक्ति नगर, दिल्ली-110007
7. विद्यापति पदावली भाग-1 व 2, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-1996
8. हिन्दी साहित्य कोश भाग-1 व 2,, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञान मण्डल लि. वाराणसी
9. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
12. हिन्दी साहित्य का अतीत भाग- 1 व 2, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. परम्परा का मूल्यांकन, डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, 1-बी. नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, वर्ष 2004
14. मध्यकालीन काव्य साधना, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी. उ.प्र.
15. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य, डॉ. मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
16. हिन्दी के कृष्ण भक्तिकालीन साहित्य में संगीत, डॉ. उषा गुप्ता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, लखनऊ
17. संगीत रत्नाकर, शारंगदेव, संगीत कार्यालय, हाथरस

18. संगीत पारिजात, अहोवल, संगीत कार्यालय हाथरस
19. संगीत दर्पण, दामोदर पंडित, संगीत कार्यालय हाथरस
20. संगीत शास्त्र, वि.ना. भातखण्डे संगीत कार्यालय हाथरस
21. संगीत विशारद, बसन्त, संगीत कार्यालय हाथरस
22. तन्त्रीनाद, डॉ. लालमणि मिश्र, साहित्य रत्नालय, कानपुर
23. काव्य प्रकाश, मम्मट, साहित्य भण्डार, मेरठ, वर्ष 1974
24. साहित्य दर्पण, आचार्य विश्वनाथ, सिद्धान्त प्रेस, कलकत्ता
25. नाट्य शास्त्र, भरतमुनि विद्या विलास प्रेस, बनारस
26. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भाग-1 व 2, डॉ. गोविन्द द्विगुणायत, भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली
27. काव्य का स्वरूप, डॉ. रामानन्द तिवारी, भारती मंदिर, भरतपुर वर्ष 1968

(ग) पत्र-पत्रिकाएं व अन्य स्रोत

1. आलोचना और समालोचक (सं. रामविलास शर्मा) का सौंदर्यशास्त्र विशेषांक
2. विकिपीडिया www.wikipedia.org